मधुमक्खी पालन की शुरूआत कैसे करें ?

मौनपालन को सहव्यवसाय या पूर्ण रोज़गार के तौर पर शुरू कर सकते हैं। इस व्यवसाय को सभी अमीर, गरीब पढ़े लिखे, अनपढ़ किसान, मजदूर, बेरोजगार नवयुवक/युवतियां और विद्यार्थी अपनी हैसीयत के मुताबिक छोटे या बड़े स्तर पर शुरू कर सकते हैं। लेकिन मौनपालन शुरू करने से पहले किसी मान्यता प्राप्त संस्थान से मौनपालन का प्रशिक्षण लेना अनिवार्य है ताकि मौनों के स्वभाव, व्यवहार, प्रबन्धन तथा मौन पालन से सम्बन्धित उपकरणों की जानकारी मिल सके। यह प्रशिक्षण सरकारी या गैर सरकारी संस्थानों जैसे कृषि एवं उद्यान विभाग, कृषि विज्ञान केन्द्र, खादी ग्रामोद्योग, केन्द्रीय मधुमक्खी पालन शोध एंव प्रशिक्षण संस्थान पूणे कुछ एन.जी.ओ. और प्राईवेट संस्थानों से मिल सकता है। इसके अलावा किसी अनुभवी मधमुक्खी पालक के साथ कार्य करके भी इस व्यवसाय के बार में जानकारी मिल सकती है।

नवम्बर से मार्च के महीनों में मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण लेना उचित व उपयोगी है। इस समय मधुमक्खी की विशेष गतिविधियां होती हैं। इसलिए प्रशिक्षण पाने वाले व्यक्ति को हर प्रकार की क्रियात्मक जानकारी प्राप्त हो जाती है जैसे मधुमक्खियों द्वारा घर छोड़ना, गण को पकड़कर मौनगृहों में स्थापित करना, पुरानी रानी मधुमक्खी को बदलना, तथा अण्डे देने की जानकारी, शहद निकालने की विधि का पूर्ण ज्ञान आदि।

क. मधुमक्खी पालन के प्रकार:

मधुमक्खी पालन निम्नलिखित प्रकार से प्रारम्भ किया जा सकता है:-

1. शौकियां मौनपालन: जब मधुमक्खियां व्यवसाय के लिए नहीं परन्तु सिर्फ शौकियां तौर पर घरों, खेतों आदि के आस-पास रखी जाती हैं।

2. स्थिर मौनपालन: जब मधुमक्खी कालोनियाँ सारा साल एक ही जगह (खेतों में या किसी अन्य सुरक्षित स्थान) पर रखी जाती हैं। इसमें मेहनत व पैसा तो कम लगता है, परन्तु फायदा भी कम होता है। स्थिर मौनपालन के लिए 2 कि.मी. परिधि में ऐसी फसलें या वृक्ष होनें चाहिए जो वर्ष भर मधुमक्खियों को भोजन दे सकें। इसे अंशकालिक व्यवसाय के तौर पर अपनाया जा सकता है।

3. स्थानांतरित मौनपालन: जब मधुमक्खी कालोनियों को विभिन्न फसलों पर और विभिन्न जगहों पर उनके फूल खिलने के समय स्थानांतरित किया जाता है। इसमें विभिन्न फसलों से शहद निकालने के कारण मुनाफा कई गुणा बढ़ जाता है परन्तु साथ में खर्च भी कई गुणा बढ जाता है।

4. परागण हेतु मौनपालन: जब किसान मधुमक्खी कालोनियों को विभिन्न फसलों पर परागण हेतु रखवाते हैं और बदले में मौनपालक को प्रति कालोनी एक निश्चित राशि देते हैं। हिमाचल प्रदेश में सेब परागण हेतु किसान मौनपालक को 700 से 1000 रूपये प्रति कालोनी देते हैं। यह छोटी अवधि (20-30 दिन) में मौनपालक के लिए एक अतिरिक्त आय का साधन है।

ख. मधुमक्खी पालन व्यवसाय में विभिन्न स्तरों पर बरती जाने वाली सावधानियां:

1. मधुमक्खी पालन व्यवसाय को आरम्भ करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना जरूरी हैः-

- मौनपालन व्यवसाय का आरम्भ 5-10 मौनवंशों से करें ताकि मौनपालक मधुमक्खियों की गतिविधियों व प्रबन्धन की बारीकियों से अवगत हो जाए और उसमें आत्मविश्वास बढ़े। इसके पश्चात इसे बड़े व्यवसायिक स्तर पर बढ़ाया जा सकता है।
- मौनपालन अनुकूल मौसम (जब ना ज्यादा गर्मी और ना ज्यादा सर्दी हो और मौनचर पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हों) में ही शुरू करना चाहिए। भारत के उत्तरी मैदानी भागों में अक्तूबर से नवम्बर का समय मधुमक्खी पालन शुरू करने के लिए उचित माना गया है क्योंकि अक्तूबर से जून तक मकरंद व पराग प्रदान करने वाले मौनचर बहुतायत में उपलब्ध होते हैं।
- मौनपालन आरंभ करने के लिए मौनवंश व अन्य सामग्री सरकारी, पंजीकृत संस्थाओं व विश्वसनीय मधुमक्खी पालक से ही खरीदें।
- मधुमक्खी के बक्से अच्छी सूखी कैल व टून की लकड़ी के और भारतीय मानक ब्यूरो के मानदंड के अनुसार बने हों। कैल व टून की लकड़ी हल्की व मजबूत होती है जबकि सफेदा व आम की लकड़ी मुड़ जाती है और कीकर की लकड़ी से बना बक्सा बहुत भारी होता है। सदैव सुपर के साथ ही बक्सा लें।

2. मधुमक्खी खरीदते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना अति आवश्यक है:

- मधुमक्खियों के वंश जितना हो सके समीपवर्ती इलाके से और विश्वसनीय मधुमक्खी पालक से ही खरीदें। मधुमक्खियां मौनालय के लिए चयन किए गए स्थान से 5 किलोमीटर दूर से खरीदे।
- एक मौनग्रह के लिए 5-6 चौखट मधुमक्खी पर्याप्त हैं।
- नए हल्के पीले रंग के छत्तों का चुनाव करें जोकि टूटे-फूटे न हों। पुराने छत्ते काले रंग के होते हैं।
- मधुमक्खियां खरीदते समय तीन शिशु (बन्द तथा खुली) चौखटों और एक मकरन्द एवं पराग की चौखट का होना आवश्यक है। हर फ्रेम पर कमेरी मधुमक्खियों की पूरी तह होनी चाहिए क्योंकि जितनी शक्तिशाली कालोनी होगी उसका प्रबन्धन उतना सरल होता है, वह शीघ्रता से बढ़ती है व अधिक मधु पैदा करती है।
- ज्यादा ड्रोन व ड्रोन-ब्रूड वाले फ्रेम मत खरीदें।

- रानी युवा व गर्भित हो। युवा रानी का उदर भूरे रंग का चमकदार होता है जबकि बूढ़ी रानी का उदर काले रंग का फीका सा होता है।
- कालोनी में कोई भी बीमारी व कीट आदि का प्रकोप नहीं होना चाहिए।

3. खरीद गए मानैवश्ं का चयन किए गए स्थान पर ले जाते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए:

- मौनगृह में खाली चौखटें देकर चौखटों की संख्या (10) पूरी कर लें ताकि रास्ते में हिलने-डूलने से मधुमक्खियां ना मरें।
- बक्से के सभी भागों (तलपट, शिशुकक्ष व भीतरी ढक्कन) को बैल्ट या कीलों से अच्छी तरह जोड़ लें ताकि रास्ते में बक्से का कोई भी भाग अपनी जगह से ना हिले।
- गर्मी के मौसम में प्रवेश द्वार जाली लगाकर और सर्दी में लकड़ी की फट्टी से कील मारकर बंद कर देना चाहिए।
- नए खरीदे मौनगृहों को सर्दियों में दिन के समय व गर्मियों में रात के समय या जल्दी सुबह के समय स्थानांतरित करना चाहिए।
- नए स्थान पर रखने के पश्चात् सबसे पहले बक्सों के प्रवेशद्वार को खोलें ताकि मधुमक्खियां अपना कार्य आरम्भ कर दें।
- दूसरे दिन मौन परिवारों को खोलकर उनका निरीक्षण करें और आवश्यकतानुसार मौन-पालन प्रबन्ध करें।

मौनगृहों को चयन किए स्थान पर लोहे के स्टैंडों पर रखें और मौनगृह के द्वार को दक्षिण-पूर्व दिशा में रखें। ऐसे रखने से मौनगृह प्रवेशद्वार पर सर्दी में जल्दी धूप व गर्मी में जल्दी छाया आ जाती है। दो मौनगृहों के बीच 3-5 फीट की दूरी होनी चाहिए। यदि मौनगृह की दो पंक्तियां लगानी हो तो पीछे वाली पंक्ति के मौन-गृह द्वार आगे वाले दो मौनगृह के बीच वाले खाली स्थान के सामने आने चाहिएं।

4. मौनालय का चयन करते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए:

मधुमक्खीपालन में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिए मौनालय (जिस स्थान पर मधुमक्खियां रखी जाती हैं) का सही चयन करना अत्यन्त आवश्यक है। जिस स्थान पर मधुमक्खियों को एक बार रख दिया जाता है वहां से उन्हें आसानी से उठाया नहीं जा सकता क्योंकि मधुमक्खियां हवा में अपने मौनगृह के प्रवेश द्वार तक एक विशेष प्रकार की सुगन्ध छोड़कर रास्ता बना लेती हैं। जिसके द्वारा वे अपने घर को पहचानती हैं। मौनालय के चारों ओर एक किलोमीटर की दूरी तक मधुमक्खियों का परिचित उड़ान क्षेत्र होता है। मधुमक्खी परिवार को अचानक कुछ दूरी पर ले जाने से कमेरी मधुमक्खियां वापिस पुराने स्थान पर आकर भटक जाती हैं। मौनलय ऐसी जगह बनाए जहाँ:-

- वर्षभर मौनचर उपलब्ध हों।
- स्वच्छ जल पास में उपलब्ध हो क्योंकि पानी कालोनी के तापमान नियन्त्रण व अन्य कालोनी गतिविधियों में बहुतायत से प्रयुक्त होता है।
- सर्दी में धूप और गर्मी में छाया का अभाव ना हो।
- वाहन के आने-जाने में दिक्कत ना हो।
- चींटियों, दीमक व जंगली जानवरों का प्रकोप ना हो।

- भूमि स्तर ऊँचा हो ताकि वर्षा ऋतु में पानी ना ठहरे।
- सर्द हवाओं से बचने के लिए हवारोधक पौधे लगे हों एवं पर्याप्त मात्रा में सूर्य की रोशनी होनी चाहिए ताकि शिशु कक्ष का तापमान एक समान बना रहे जो कि रखरखाव के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है।
- बीमारियों से बचने के लिए भी सूर्य की रोशनी अति आवश्यक है।
- बिजली की तारें पास में ना हों क्योंकि मधुमक्खियां तारों की ओर आकर्षित होकर टकरा-2 कर मरती रहती हैं।
- कीटनाशियों के प्रयोग वाले क्षेत्र अथवा रसायन बनाने वाले कारखाने पास में ना हों।
- एक स्थल पर आवश्यकता से अधिक कालोनियां नहीं होनी चाहिएं। अधिक कालोनियां होने से आपसी प्रतिस्पर्धा के कारण शहद उत्पादन कम होगा। कालोनियों के मध्य कम से कम 3 फुट व विभिन्न लाईनों के मध्य 10 फुट का अन्तर अवश्य होना चाहिए।